* मुगलों की दक्कन नीति *

- पृष्ठभूमि
  - कारण
- विकास
  - अकबर
  - जहाँगीर
  - शाहजहाँ
  - औरंगजेब

पृष्ठभूमि :-

मुगलों की दक्कन नीति उसकी साम्राज्यवादी एवं पूर्व की परम्पराओं से जुड़ी है। वस्तुतः उत्तर भारत पर नियंत्रण करने के पश्चात् विस्तार की आकांक्षा साम्राज्यवादी शासकों की रही है। समुद्रगुप्त से लेकर अलाउद्दीन खिलजी तक यह प्रयास देखा जा सकता है। इस तरह मुगलों की नीति साम्राज्यवादी विस्तार की निरंतरता को सूचित करता है।

⇒ मुगलो की दक्कन नीति दक्कन के सामरिक महत्व तथा मुगल साम्राज्य की आवश्यकता से प्रेरित थी। जिसका प्रारंभ अकबर ने शुरु किया।

⇒ मुगलों की दक्कन नीति आर्थिक, प्रशासनिक आवश्यकता से प्रेरित थी।

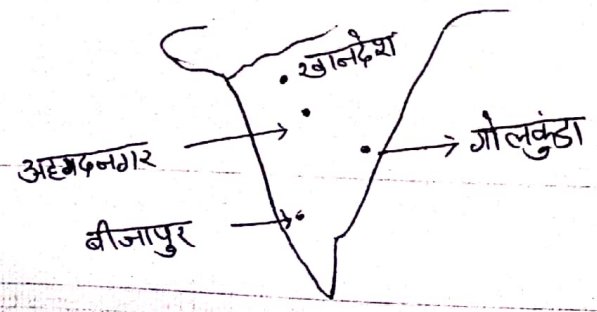

खानदेश - 1601 'अकबर' (कैकाल में)
अहमदनगर - 1633 शाहजहां
बीजापुर - 1686 औरंगजेब
गोलकुंडा - 1687 - औरंगजेब

Scanned with CamScanner

* अकबर की दक्कन नीति :-

प्रेरित करने वाले कारक :-

16 वीं सदी अकबर ने उत्तर भारत की विजय की। अतः दक्कन में विस्तार एक तार्किक आवश्यकता थी। वस्तुतः 1572-73 में अकबर ने गुजरात विजय की व दक्कन के राज्यों पर नियंत्रण की योजना बनाई; क्योंकि गुजरात से विद्रोही भागकर दक्कनी राज्यों में शरण लेते थे।

⇒ गुजरात के बंदरगाहों तक पहुँचने वाले व्यापारिक मार्गों को सुरक्षित रखना चाहता था। वस्तुतः अकबर सूरत क्षेत्र पर अपना नियंत्रण बनाना चाहता था। इस सूरत वृहद् क्षेत्र का निर्माण गुजरात, मालवा एवं खान देश के क्षेत्रों को मिलाकर होता था। यह एक विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र के रूप में मौजूद था।

⇒ दक्कनी राज्यों के आपसी संघर्ष ने भी अकबर को दक्कन में हस्तक्षेप के लिए प्रेरित किया।

गतिविधि :-

दक्कन में खानदेश, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा राज्य थे। खानदेश दक्कन का प्रवेश द्वार था व गुजरात विजय पश्चात् मुगल राज्य की सीमा पर था। अतः इस पर नियंत्रण जरूरी था

⇒ इस क्रम में 1591 में दक्कन विस्तार की नीति तैयार की

Scanned with CamScanner

अपनी कूटनीतिज्ञ राजनीति के साथ दक्कन के चारों राज्यों में दूत भेजे जहाँ खान देश ने उसकी सर्वोच्चता स्वीकार की जबकि अहमदनगर ने दूत का अपमान किया। अतः उसने इन राज्यों के विरुद्ध सैन्य अभियान की योजना बनाई व उसे यह अवसर 1595 में अहमदनगर के उत्तराधिकार के संघर्ष में मिला। यहाँ हस्तक्षेप करते हुए बहादुरशाह को शासक बनाया गया व मुगलों को बरार का क्षेत्र प्राप्त हुआ।

⇒ इस क्रम में अकबर ने खान देश पर यह आरोप लगाया कि उसे अहमदनगर अभियान के दौरान पर्याप्त सहयोग नहीं दिया गया। अतः 1601 ई. में खान देश को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

⇒ इस समय सलीम के विद्रोह के कारण उसे उत्तर भारत लौटना पड़ा व अकबर का दक्कन अभियान यहीं रुक गया।

* जहाँगीर की दक्कन नीति:-

जहाँगीर के समय दक्कन राज्य में मलिक अंबर प्रधानमंत्री था। उसने दक्कनी राज्यों से मिलकर मुगल विरुद्ध अभियान कर बरार क्षेत्र पर नियंत्रण किया। खुर्रम के नेतृत्व में जहाँगीर ने अहमदनगर विरुद्ध सैन्य अभियान भेजा व पुनः अपने क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया। इस तरह जहाँगीर के काल में दक्कन में मुगल सत्ता का विस्तार अकबर कालीन ही रहा।

Scanned with CamScanner

* शाहजहाँ की दक्कन नीति :-

शाहजहाँ दक्कनी राज्य पर अपनी संप्रभुता स्थापित करना चाहता था। वस्तुतः जहाँगीर के समय से ही अहमदनगर से संघर्ष बढ़ गया था। ऐसे में अहमदनगर का विलय जरूरी था।

⇒ अतः 1633 में शाहजहाँ ने अहमदनगर का अभियान कर उसे मुगल राज्य का हिस्सा बनाया।

⇒ अब अहमद नगर की विजय को स्थाई बनाने हेतु बीजापुर व गोलकुंडा से संधि कर ली।

संधि के प्रावधान :-

(i) अहमदनगर का 1/3 भाग बीजापुर को दिया जाएगा व बदले में बीजापुर 20 लाख मुगलों को देगा।

(ii) बीजापुर व गोलकुण्डा के विवाद में निर्णायक अधिकार मुगलों को होगा।

(iii) बीजापुर यदि मराठा नेता शाहजी भौंसले को सेवा में रखता है, तो उसे मुगल सीमा से दूर तैनात करेगा।

(iv) दूसरी तरफ गोलकुंडा से संधि करते हुए उसे

Scanned with CamScanner

अपनी दक्षिणी सीमा में विस्तार की अनुमति दी गई व बदले में कुछ धन राशि गोलकुण्डा से प्राप्त करने की बात की गई।

यह संधि शाहजहाँ की दूरदर्शिता की परिचायक थी। संधि के तहत अहमदनगर विजय को स्थायित्व प्रदान किया गया व संधि की पवित्रता को बनाए रखने का वचन देते हुए शाहजहाँ ने अपनी हथेली की छाप संधि पत्र पर लगाई व कहा कि इसका पीढ़ी दर पीढ़ी पालन किया जाएगा। किंतु 20 वर्ष बाद अपने ही जीवन काल में शाहजहाँ ने इस संधि को तोड़ दिया। फलतः मुगलों के साथ संबंध जटिल हो गए।

संधि तोड़ने के कारण :-

(i) बीजापुर में शाह जी भोंसले व गोलकुंडा में मीर जुमला का प्रभाव बढ़ रहा था। यह मुगलों के लिए चुनौती प्रस्तुत कर रहे थे।

(ii) मध्य एशिया के बल्ख बुखारा अभियान से मुगल राजकोष पर वित्तीय बोझ बढ़ा व वहाँ अपेक्षित सफलता भी नहीं मिली।

(iii) दक्कन मामलों में मुगलों को वित्तीय दबाव का सामना करना पड़ा व शाहजहाँ ने दक्कन

Scanned with CamScanner

के खर्च को पूरा करने के लिए सूरत व मालवा के खजाने का प्रयोग करने से मना किया।

इस स्थिति से परिचालित होकर शाहजहाँ ने यह आदेश दिया कि बीजापुर से उन प्रदेशों की प्राप्ति पुनः की जाए तो 1636 के संधि तहत उसे दिया गया। अतः औरंगजेब ने इस आदेश का पालन करने के क्रम में बीदर कल्याणी जैसे क्षेत्र पर नियंत्रण किया व बीजापुर को पूर्णतः मिलाने का प्रयास किया पर दारा की सलाह पर शाहजहाँ ने यह अभियान रुकवा दिया।

इस तरह गोलकुंडा के प्रति युद्ध हार जाने की बकाया राशि प्राप्त करने हेतु सैन्य कार्यवाही की गई। इस तरह 1636 की संधि को तोड़ दिया। फलतः दक्कन-मुगल संबंध जटिल हो गया। दक्कनी राज्य मुगलों को संदेह से देखने लगे। अविश्वास पैदा हुआ। इस तरह शाहजहाँ ने अपनी दक्कन नीति के तहत बीजापुर व गोलकुंडा को मुगल साम्राज्य में मिलाने की सूची में डाल दिया जिसे पूरा करने का दायित्व औरंगजेब का था।

Scanned with CamScanner

* औरंगजेब की दक्कन नीति :-

औरंगजेब की दक्कन नीति मुगलों की दक्कन नीति का स्वाभाविक परिणाम है। वस्तुतः शाहजहाँ के समय बीजापुर गोलकुंडा से मुगलों का संघर्ष प्रारंभ होगया। इस समय औरंगजेब दक्कन का सूबेदार था। अतः इस क्षेत्र की उसे पर्याप्त जानकारी थी।

⇒ औरंगजेब की दक्कन नीति के 2 पहलू हैं-

(i) मराठों के प्रति नीति

(ii) बीजापुर एवं गोलकुंडा के प्रति

सत्ता प्राप्ति के आरंभिक दौर में औरंगजेब का मुख्य उद्देश्य बीजापुर से उन सभी क्षेत्रों की प्राप्ति करना था जिसे 1636 की संधि के तहत शाहजहाँ ने दिया था। अतः इस दिशा में कार्य करते हुए उसने बीजापुर से उन क्षेत्रों को प्राप्त भी किया तो साथ ही शिवाजी की समस्या से निपटने के लिए जयसिंह को दक्कन का सूबेदार नियुक्त किया।

⇒ 1668 के पश्चात् औरंगजेब ने मुख्य चुनौती के रूप में मराठों को माना। वस्तुतः शिवाजी मुगल कैद से भाग निकले थे और मुगलों के लिए कड़ी चुनौती प्रस्तुत कर रहे थे। अतः औरंगजेब ने बीजापुर और गोलकुण्डा से मिलकर मराठों को नियंत्रित करने का प्रयास किया। इसी क्रम में उनकी धार्मिक भावनाओं को भी उभार कर

Scanned with CamScanner

सहयोग लेना चाहा किंतु असफल रहा। तो गोलकुंडा के अधिकारी मदन्ना, अकन्ना ने गोलकुण्डा, बीजापुर एवं मराठों के बीच त्रिपक्षीय गठबंधन बनाने का प्रयास किया। अतः दक्कन में मुगलों के विरुद्ध क्षेत्रीय शक्तियाँ एकत्र हो गई। इसी दौर में औरंगजेब के पुत्र शाहजादा अकबर ने विद्रोह किया और फिर दुर्गादास राठौड़ के सहयोग से उसे मराठों के यहाँ पहुँचा दिया गया। अतः औरंगजेब ने मराठों के विरुद्ध आक्रामक नीति अपनाई। और अब इस अभियान में बीजापुर और गोलकुण्डा का सहयोग नहीं मिला तो उसके विरुद्ध होगए अब औरंगजेब निश्चय किया कि मराठों से पहले बीजापुर और गोलकुण्डा को समाप्त किया जाये। अतः सैन्य अभियान कर 1686 में बीजापुर और 1687 में गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। इस तरह दक्कन में मुगलों के विस्तार की प्रक्रिया जो अकबर के काल से शुरू हुई अब पूरी हो गई। किंतु अभी भी मराठों की चुनौती मौजूद थी।

अतः औरंगजेब ने मराठों के विरुद्ध सैन्य कार्यवाही प्रारम्भ की। इसी क्रम में 1689 में शिवाजी के उत्तराधिकारी सम्भाजी को मार डाला किंतु इससे मराठा छत्रपति चाहे समाप्त हुआ हो, मराठा संघर्ष की भावना समाप्त नहीं हुई। अतः मराठे जगह-2 मुगलों से संघर्षरत हुए और औरंगजेब मृत्युपर्यंत इस संघर्ष में उलझा रहा।

Scanned with CamScanner

समीक्षा :-

दक्कन नीति के संदर्भ में गोलकुण्डा और बीजापुर के विलय से मुगल सत्ता का क्षेत्रीय विस्तार तो हुआ तो यह भी सत्य है कि इस विस्तार ने मुगलों के लिए समस्याओं की एक लंबी श्रृंखला भी निर्मित की। दक्कन की गतिविधियों से मुगल राजकोष पर वित्तीय दबाव बढ़ा और उत्तर भारत में भी औरंगजेब की प्रशासनिक पकड़ कमजोर हुई क्योंकि वह लगातार अनेक वर्षों तक दक्कन में ही मौजूद रहा। इतना ही नहीं बीजापुर, गोलकुंडा की समाप्ति से अब मुगल सीधे मराठों के शत्रु बन गये। अतः संघर्ष बढ़ा तो साथ ही मुगलों को दक्कनी सरदारों (अमीरों) को संतुष्ट रखने के लिए उन्हें मुगल सेवा में रखना पड़ा। इससे बेजागिरी की समस्या उत्पन्न हुई। फलतः प्रशासनिक अव्यवस्था और जागीरदारी संकट गहरा हुआ।

Scanned with CamScanner